लाल बहादुर शास्त्री के जीवन के नैतिक मूल्य

मेन्स के लिये:

लाल बहादुर शास्त्री के जीवन के नैतिक मूल्य

चर्चा में क्यों?

भारत ने 2 अक्तूबर, 2022 को देश के दूसरे **प्रधानमंत्री** [लाल बहादुर शास्त्री](#) **की 118वीं जयंती मनाई।**

शास्त्री जी का जीवन एक संदेश:

- **जाति व्यवस्था के खिलाफ:**
  - शास्त्री का जन्म रामदुलारी देवी और शारदा प्रसाद श्रीवास्तव के घर हुआ था। हालाँकि प्रचलित जाति व्यवस्था के खिलाफ होने के कारण उन्होंने अपना उपनाम छोड़ने का फैसला किया।
  - वर्ष 1925 में वाराणसी के **काशी विद्यापीठ से स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्हें 'शास्त्री'** की उपाधि दी गई।
  - **'शास्त्री'** शीर्षक 'विद्वान' या ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है, जो पवित्र शास्त्रों का ज्ञाता होता है। इस प्रकार शास्त्री जी ने छोटी सी उम्र में ही व्यापक दृष्टिकोण अपनाया।
- **प्रतिकूल समय के दौरान ज़िम्मेदारियाँ लेना:**
  - वह देश की असंख्य ज़िम्मेदारियों को उठाने वाले सार्वजनिक जीवन जीने वाले दिग्गजों में से एक थे।
  - विपरीत परिस्थितियों में भी उन्होंने खुद को जवाबदेह ठहराने के साथ एक सच्चे नेता के गुणों का प्रदर्शन किया।
  - इतने कर्तव्यनिष्ठ थे कि **जवाहरलाल नेहरू के मंत्रिमंडल में रेल मंत्री रहने** के दौरान वर्ष 1956 में तमिलनाडु के अरियालुर में एक ट्रेन दुर्घटना के बाद उन्होंने इस्तीफा दे दिया।
  - इनके व्यक्तित्व की नेहरू सहित सभी ने सराहना की,गई जिन्हें वे अपना "हीरो" मानते थे।
- **सार्वजनिक और निजी जीवन में एकरूपता:**
  - वर्ष 1965 में **भारत पाकिस्तान युद्ध के दौरान** देश खाद्यान्न की भारी कमी का सामना कर रहा था।
    - इस समय अमेरिका की तरफ से भी खाद्य आपूर्ति में कटौती का अतिरिक्त दबाव था।
  - इस संकट का सामना करते हुए लाल बहादुर शास्त्री ने घोषणा की कि **अगले कुछ दिनों के लिये वह अपने पूरे परिवार के साथ शाम का भोजन छोड़ देंगे।**
- **नैतिकता:**
  - ऐसा कहा जाता है कि **उनके आधिकारिक उपयोग वाली कार का** एक बार उनके बेटे ने इस्तेमाल कर लिया था।
    - जब उन्हें इस बात का पता चला तब उन्होंने अपने ड्राइवर से यह पता करने को कहा कि गाड़ी कितनी दूर चली है और फिर बाद में उन्होंने **सरकार के खाते में उतना पैसा** जमा कर दिया।

लाल बहादुर शास्त्री की प्रासंगिकता:

- भारतीयों को उनकी **सादगी, विनम्रता, मानवतावाद, तपस्या, कड़ी मेहनत, समर्पण और राष्ट्रवाद का अनुकरण करना चाहिये।**
- वर्ष 1964 में शास्त्री जी का पहला स्वतंत्रता दिवस भाषण आज भी उतना ही प्रासंगिक है जितना कि उस समय था। इसमें उन्होंने **चरित्र निर्माण एवं नैतिक शक्ति** पर ज़ोर दिया था, जिसका विशेष महत्त्व है, खासकर तब जब हम अपने आसपास मूल्यों के सर्वांगीण पतन को देख सकते हैं।

[स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस](#)

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/ethical-values-from-the-life-of-lal-bahadur-shastri